कम चीनी मिलों ने कर दिया ज्यादा शुगर प्रॉडक्शन

Feb 3, 2016, 09.00 AM IST

[पीटीआई | नई दिल्ली]

देश में मौजूदा शुगर मार्केटिंग ईयर (अक्टूबर से सितंबर) के पहले चार महीनों में प्रॉडक्शन 4.54 पर्सेंट बढ़कर 1.42 करोड़ टन रहा। पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह 1.36 करोड़ टन का था।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) ने इस वर्ष के लिए शुगर प्रॉडक्शन का अनुमान 10 लाख टन घटाकर 2.6 करोड़ टन कर दिया है। 2014-15 के मार्केटिंग ईयर में प्रॉडक्शन 2.83 करोड़ टन रहा था।

इस्मा ने बताया कि अक्टूबर-जनवरी के बीच काम करने वाली चीनी मिलों की संख्या कम रहने के बावजूद प्रॉडक्शन

इस्मा ने बताया कि अक्टूबर-जनवरी के बीच काम करने वाली चीनी मिलों की संख्या कम रहने के बावजूद प्रॉडक्शन बढ़ा है। अक्टूबर-जनवरी के दौरान ऑपरेशन वाली मिलों की संख्या 510 रही, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 517 थी। महाराष्ट्र में 13 और कर्नाटक और उत्तर प्रदेश प्रत्येक में एक चीनी मिल ने मौजूदा वर्ष के लिए गन्ने की पेराई का काम बंद कर दिया है।

देश में चीनी का सबसे अधिक उत्पादन करने वाले महाराष्ट्र में उत्पादन बढ़कर 54.4 लाख टन पर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 5.43 लाख टन था। उत्तर प्रदेश में उत्पादन बढ़कर 36.1 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 33.7 लाख टन का था। कर्नाटक में उत्पादन 23.1 लाख टन से बढ़कर 26.8 लाख टन, गुजरात में 6.1 लाख टन से बढ़कर 6.9 लाख टन और तमिलनाडु में 2.1 लाख टन से बढ़कर 2.3 लाख टन हो गया।

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में चीनी का उत्पादन अक्टूबर-जनवरी में संयुक्त तौर पर गिरकर 4.9 लाख टन रहा।

इस्मा का कहना है कि मौजूदा वर्ष में चीनी का उत्पादन देश की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त होगा।

प्याज का दाम 10 रुपये किलो से नीचे

महाराष्ट्र की लासलगांव थोक मंडी में प्याज के दाम गिरकर 10 रुपये प्रति किलोग्राम से नीचे आ गए हैं। लासलगांव मंडी में सितंबर में प्याज की कीमत 41.30 रुपये प्रति किलोग्राम थी, जो फरवरी में घटकर 9.50 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई।

नासिक के नेशनल हॉर्टिकल्चरल एंड रिसर्च फाउंडेशन (एनएचआरडीएफ) के डायरेक्टर आर पी गुप्ता ने बताया, 'खरीफ के सीजन में प्याज की फसल की आवक में वृद्धि से सप्लाई बढ़ी है और इसके चलते अक्टूबर से प्याज के दाम लगातार गिर रहे हैं।' प्याज की कीमतें इस वर्ष के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई हैं और इनमें एक-दो रुपये की और गिरावट आ सकती है क्योंकि देशभर में इसकी सप्लाई अच्छी बनी हुई है।

2014-15 के क्रॉप ईयर (जुलाई-जून) में प्याज का उत्पादन घटकर 189 लाख टन रहने का अनुमान है, जो एक वर्ष पहले 194 लाख टन था।

पिछले वर्ष अगस्त में प्याज की रिटेल कीमतें बढ़कर 80 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई थी। इसकी वजह सप्लाई में भारी कमी थी। सरकार ने कीमतों पर लगाम लगाने के लिए प्याज का इम्पोर्ट भी किया था। इसके साथ ही प्याज का मिनिमम एक्सपोर्ट प्राइस (एमईपी) बढ़ाकर 700 डॉलर प्रति टन कर दिया गया था। इसके बाद कीमतों में काफी कमी हुई और दिसंबर में प्याज पर एमईपी को हटा दिया गया था।